

दिनांक 2018-11-16

श्री राम नारायण मिश्रा

द्वारा आज दि. 28/6/16 को
प्रस्तुत

60/16/16
ब्लॉक ऑफ कोर्ट

राजस्व मण्डल म.प्र. ग्वालियर

121

राम नारायण मिश्रा तनय श्री शिव शंकर मिश्रा उम्र 75 वर्ष निवासी ग्राम
बामनगढ़ पो0 आ0 खोढ़मानी तहसील हनुमना जिला रीवा (म0 प्र0)

— आवेदक/निगरानीकर्ता

बनाम *

01. ओंकार प्रसाद,
02. उमेश कुमार,
03. अजय कुमार तीनों के पिता श्री अमृत लाल निवासी ग्राम देवरा तहसील
हनुमना जिला रीवा (म0 प्र0)।
04. विद्यावती पत्नी बाल मुकुन्द (मृतक निर्वसीयती),
05. बालमुकुन्द तनय राम भुवन (मृतक) दोनों निवासी ग्राम सेमरिहा तहसील
मऊगंज जिला रीवा (म0 प्र0)।
06. शासन मध्य प्रदेश द्वारा जिलाध्यक्ष रीवा जिला रीवा (म0 प्र0)।

— गैर निगरानीकर्तागण

निगरानी विरुद्ध आदेश श्रीमान्
अनुविभागीय अधिकारी महोदय
तहसील हनुमना जिला रीवा (म0
प्र0) प्रकरण क्रमांक 29ए.6/14-15
आदेश दिनांक 16.06.2016

निगरानी अन्तर्गत धारा 50 मध्य
प्रदेश भू-राजस्व संहिता 1959 ई0।

राम नारायण

राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश, ग्वालियर

आदेश पृष्ठ
भाग - अ

प्रकरण क्रमांक निगरानी 2078-दो/2015

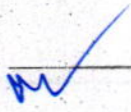
जिला रीवा

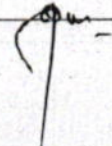
रामनारायण

विरुद्ध

ओंकार

स्थान तथा दिनांक	कार्यवाही अथवा आदेश	पक्षकों एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर
23-8-2016	<p>आवेदक अधिवक्ता द्वारा ग्राह्यता पर प्रस्तुत तर्कों। पर विचार किया।</p> <p>2/ आवेदक अभिभाषक ने मुख्य रूप से यही तर्क किया कि कि प्रश्नाधीन भूमि के संबंध में मृतक विद्यावती से आवेदक ने अनुबंध किया था तथा अनुबंधपत्र निष्पादन दिनांक को 550000/- अदा किये थे। विक्रय पत्र संपादित होने के पूर्व ही अनावेदिका की विद्यावती की मृत्यु हो गयी इसके पश्चात विद्यावती के पति अनावेदक क्रमांक 5 बालमुकुन्द को शेष राशि 250000/- भुगतान किया। इसी बीच अनावेदक क्रमांक 1 लगायत 3 ने फर्जी वसीयत के आधार नामांतरण हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया जिसके आधार पर अनावेदकों नामांतरण हो गया। आवेदक द्वारा उक्त आदेश को दिनांक 23.9.14 के विरुद्ध पुनर्विलोकन का आवेदन पेश किया जो तहसीलदार ने 20-11-14 को स्वीकार किया जाकर पूर्ववत भूमियां मृत अनावेदक क्रमांक 4 के नाम कर दी। उक्त आदेश के विरुद्ध अनावेदक क्रमांक 1 लगायत 3 द्वारा अनुविभागीय अधिकारी के समक्ष अपील प्रस्तुत की जिसमें आवेदक को पक्षकार नहीं बनाया। चूंकि पुनर्विलोकन आदेश में आवेदक पक्षकार था इसलिए वह हितबद्ध पक्षकार था तथा उसे अनुविभागीय अधिकारी न्यायालय में बनाया जाना चाहिए था, परन्तु अनावेदकगण द्वारा उसे अनुविभागीय अधिकारी के समक्ष बना पक्षकार बनाये अपील पेश की गई। जब अनुविभागीय अधिकारी के समक्ष आवेदक द्वारा पक्षकार बनाने हेतु आवेदन पेश किया तो अनुविभागी अधिकारी ने अंतरिम आदेश दिनांक 16-6-16 के द्वारा निरस्त करने में त्रुटि की है। अनुविभागीय अधिकारी के उक्त आदेश के विरुद्ध यह निगरानी इस न्यायालय में प्रस्तुत</p>	





की गई है।

3/ आवेदक अभिभाषक द्वारा प्रस्तुत तर्कों के परिप्रेक्ष्य में आदेश की प्रति एवं अन्य दस्तावेजों का अवलोकन किया जिससे प्रकट होता है कि आवेदक द्वारा अनुबंध पत्र के आधार पर तहसीलदार के समक्ष पुनर्विलोकन का आवेदन पेश किया गया था। पुनर्विलोकन आदेश को अनुविभागीय अधिकारी के समक्ष चुनौती दी गई है जिसमें आवेदक को पक्षकार नहीं बनाया है। आवेदक द्वारा आदेश 1 नियम 10 सी.पी.सी. का आवेदन पेश करने में अनुविभागीय अधिकारी ने उक्त आवेदन पर विवरणात्मक आदेश पारित न कर मात्र यह लेख करते हुये कि आवेदन अमान्य किया जाता है। अनुविभागीय अधिकारी को विवरणात्मक आदेश पारित करना चाहिए था, जो नहीं किया गया है। अतः अनुविभागीय अधिकारी का अंतरिम आदेश दिनांक 16-6-16 निरस्त करते हुये प्रकरण इस निर्देश के साथ प्रत्यावर्तित किया जाता है। पुनः आदेश 1 नियम 10 सी.पी.सी. का आवेदन पर सुनवाई कर विवरणात्मक एवं व्याख्यात्मक आदेश पारित करें। इस निर्देश के साथ प्रकरण का निराकरण किया जाता है। पक्षकार सूचित हों। प्रकरण दाखिल रिकार्ड हो।

(के०सी० जैन)
सदस्य